सूरदास के काव्य में वात्सल्य एवं सगुण भक्ति

संतोष कुमार यादव (हिन्दी)
शासकीय श्यामा प्र0मुखर्जी महा0
सीतापुर,जिला– सरगुजा छ0ग0

''कृष्ण भक्ति की अजस्र धारा को प्रवाहित करने वाले भक्त कवियों में सूरदास का नाम सर्वोपरि है। हिन्दी साहित्य में भगवान श्रीकृष्ण के अनन्य उपासक और ब्रजभाषा के श्रेष्ठ कवि महात्मा सूरदास हिन्दी साहित्य के सूर माने जाते हैं।'' (1)

महात्मा सूरदास बल्लभाचार्य की शिष्य –परम्परा में उनके पुत्र विट्ठलनाथ द्वारा प्रतिष्ठित 'अष्टछाप' के कवियों में सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं। विद्वानों का मत है कि सूरदास का जन्म दिल्ली के निकट बल्लभगढ़ से 2 मील दूर सीही नामक गांव में सन् 1478 के आस–पास एक ब्राम्हण परिवार में हुआ था। किशोरावस्था में ही विरक्त होकर ये मथुरा चले गये और आगरा –मथुरा के बीच गऊघाट पर साधु के रूप में रहने लगे। यही महाप्रभु वल्लभाचार्य जी ने इन्हें दीक्षा प्रदान की जिनकी आज्ञा से सूरदास जी ने श्रीमद्भागवत के आधार पर कृष्णलीला का विस्तापूर्वक पद्यशैली में गायन किया। सूरदास जी के अंधत्व को लेकर विद्वानों में मतभेद हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में बालकों की स्वाभाविक चेष्टाओं तथा प्राकृतिक सौन्दर्य , दृश्यों का जैसा सजीव और यथार्थ चित्रण किया है और रंगरूप की जो परिकल्पनाएं की है उसके आधार परउनका जन्मांध होना असंभव सा प्रतीत होता है। सूरदास का देहावसान सन् 1583 के लगभग हुआ।

''सूरदास जी का वृत्त ''चौरासी वैष्णवों की वार्ता'' में केवल इतना ज्ञात होता है कि पहले गऊघाट पर एक साधु या स्वामी के रूप में रहा करते थे और षिष्य किया करते थे। गोवर्द्धन पर श्रीनाथ जी का मंदिर बन जाने के पीछे एक बार बल्लभाचार्य जीग गऊघाट पर उतरे तब सूरदास उनके दर्षन को आये और उन्हें अपना बनाया एक पद गाकर सुनाया।''(2)

महाकवि सूरदास श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त थे। कृष्ण के मनोहरी रूपों का वर्णन करते हुए आपके काव्य में वात्सल्य श्रृंगार एवं भक्ति की त्रिवेणी प्रवाहित होती दिखाई पड़ती है। बाल लीला के वर्णन में जैसी तन्मयता आपकी वाणी में मिलती है वैसी अन्यत्र दुलर्भ है। वैसे तो इनके काव्य में सभी रसों का समावेश हुआ है, किन्तु वात्सल्य एवं श्रृंगार की प्रधानता है। इन्होंने वात्सल्य का कोना –कोना झांका है तथा संयोग और वियोग दोनों प्रकार के श्रृंगार का वर्णन किया है।

रचनाएँ –

सूरदास द्वारा रचित ग्रंथ है – 'सूरदास' , 'सूरसारावली' और 'साहित्य लहरी'।

1. सूरसागर –

सूरसागर के वर्ण्य विषय का आधार 'श्रीमद्भागवत' है। भक्ति को भव्य एवं उदात्त रूप में चित्रित करते समय श्रृंगार और माधुर्य का जैसा वर्णन सूर ने अपने सूरसागर में ब्रजभाषा में किया है , वैसा उनसे पूर्व किसी लोकभाषा में नहीं हुआ है। सूरसागर का सर्वाधिक मर्मस्पर्शी अंश भ्रमरगीत है जिसमें गोपियों की वाक्पटुता अत्यन्त मनोहारिणी है। कहा जाता है कि इनके पदों की संख्या सवा लाख थी जिसमें गोपियों की वाकपटुता में से अब केवल 10 हजार पद ही मिलते हैं सूरसागर के पद गेयता से युक्त है जिन्हें भक्त बड़ी तन्मयता से गाते हैं।

2. सूर सारावली –

विद्वानों ने इस ग्रन्थ को विवादास्पद माना है तथापि रचना शैली , विषय–वस्तु, भाषा भाव, सभी दृष्टियों से यह सूरदास की प्रमाणिक रचना है इसमे 1107 छन्द है।

3. साहित्य लहरी –

इस ग्रन्थ में सूरदास के 'दृष्टकूट' पद संकलित हैं जिनकी संख्या 118 है। रीतिशास्त्र का विवेचन थी इन पदों में मिलता है। विशेष रूप से नायिका भेद और अलंकार निरूपण इस ग्रन्थ की विषय वस्तु है। कहीं –कहीं श्रीकृष्ण की बाल लीला से संबंधित पद भी मिलते हैं। महाभारत के कुछ प्रसंग भी साहित्य लहरी में वर्णित हैं।

भावपक्ष –

महाकवि सूरदास, श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त थे। कृष्ण के मनोहारी रूपों का वर्णन करते हुए आपके काव्य में वात्सल्य श्रृंगार एवं भक्ति की त्रिवेणी प्रवाहित होती दिखाई होती है। बाललीला के वर्णन में जैसी तन्मयता आपकी वाणी में मिलती है वैसी अन्यत्र दुलर्भ है। वैसे तो इनके काव्य में सभी रसों का समावेश हुआ है, किन्तु वात्सल्य एवं श्रृंगार की प्रधानता है। इन्होंने वात्सल्य का कोना –कोना झांका है तथा संयोग और वियोग दोनों प्रकार के श्रृंगार का वर्णन किया है।

कला पक्ष –

सूरदास जी ने माधुर्यमयी ब्रजभाषा में अपने साहित्य की रचना की है जो बहुत ही सरस है। भाषा साहित्यिक होते हुए भी बोल –चाल की भाषा के बहुत निकट है। इन्होंने अपने काव्य में मुक्तक शैली का प्रयोग किया है। किसी भी पद का दूसरे पद से कोई संबंध नहीं है। सूरदास जी ने अपे गेयपद शैली को अपनाया है। सभी प्रमुख अलंकार सूरर के काव्य में उपलब्ध हैं। उपमा , उत्प्रेक्षा, रूपक, अनुप्रास, यमक, श्लेष आदि अलंकार बड़े ही स्वाभाविक रूप से सूर के काव्य का रूपक श्रृंगार करते हैं। सूरदास जी ने हिन्दी काव्य जगत के दैदीप्यमान नक्षत्र है। वे भक्तिकाल की कृष्णाश्रयी सगुण भक्तिशाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। अष्टछाप कवियों में आपका प्रमुख स्थान है। वे वात्सल्य रस के चित्रण में अद्वितीय हैं। इसी कारण से उन्हें वात्सल्य रस के सम्राट की उपाधि से विभूषित किया गया है। सूरदास के कारण ही भक्तिकाल को स्वर्ण युग की संज्ञा दी जाती है। वास्तव में सूरदास हिन्दी साहित्याकाश के सूर्य के समान हैं।

सूरदास की काव्य एवं काव्यगत विशेषताएं –

1. सगुण के उपासक –

सूर की उपासना ईश्वर के सगुण –साकार रूप की है। ईश्वर के निराकार निर्गुण रूप का वर्णन ही बहुत कठिन है, उनकी उपासना न जाने कैसी होगी ? सूरर ने अपनी सगुण उपासना का कारण इस प्रकार से किया कि मन को प्रभावित कर सके।निर्गुण ब्रम्ह इन्द्रियातीत है, मन और वाणी के परे है, इसलिए सूरदास सगुण कृष्ण लीलाओं का गान करते हैं।

2. लीला पुरूषोत्तम कृष्ण की भक्ति –

सूर के इष्टदेव कृष्ण लीला पुरूषोत्तम हैं। वे राम के समान मर्यादा पुरूषोत्तम नहीं है। कृष्ण ने ब्रज की गोपियों के साथ रास रचाया और प्रेम किया। सूर के कृष्ण खेल में हार जाने पर भी अपनी हार स्वीकार नहीं करते और सखाओं को दांव देने में आनाकानी करते हैं।इस प्रकार अवसर का वर्णन करने वाला पद इस प्रकार है –

''खेलत में को काकौ गुसैयाँ।
हरि हारे जीते श्रीदास बरबस ही कत करत रिसैयाँ।।''

3. सूर का वात्सल्य वर्णन –

सूर वात्सल्य र के सम्राट कहे जाते हैं। सूर ने अपनी अंधी आंखों से बालक की जितनी क्रियाएं देखी हैं, उतनी आंखों वाले कवि भी नहीं देख पाते हैं। सूर वात्सल्य रस का कोना–कोना झांक आये हैं। सूर का हृदय सबसे अधिक कृष्ण की बाल लीला के वर्णन में ही रमा है। सूर ने वात्सल्य के संयोग और वियोग दोनों पक्षों का सुन्दर चित्रण किया है।

4. सूर की कविता की भाषा –

ब्रज प्रदेश सूरदास की ईष्ट देव कृष्ण की लीला भूमि था। सूर भी जीवन भर प्रदेश में ही रहे हैं। इस कारण ब्रज क्षेत्र की भाषा ब्रज भाषा में काव्य रचना सूर की विवशता थी। सूर की ब्रजभाषा जनसाधारण की बोलचाल की ब्रजभाषा है। ब्रजभाषा में भाव प्रकाशन की अद्भूत क्षमता और माधुर्य का परिचय पहली बार सूर की कविता के माध्यम से ही हुआ। सूर की कविता की भाशा का एक सुन्दर उदाहरण भी प्रस्तुत है।

सूर के काव्य में वात्सल्य

सूरदास ने यद्यपि सूरसागर में कृष्ण के जीवन चरित्र को आधार बनाकर पद रचना की है, पर उनका मन कृष्ण की बाल लीलाओं में अधिक रमा है। सूर ने कृष्ण की लीलाओं का वर्णन करके उन्हें देखने वाले माता –पिता अर्थात यशोदा और नंद के मन में उमड़ने वाले प्रेम –भाव एवं अनुभव होने वाले आनंद का भी वर्णन किया है। संतान एवं संतान की क्रीड़ाओं को देखकर माता–पिता के मन उमड़ने वाला प्रेम साहित्य में वात्सल्य कहा जाता है अर्थात वात्सल्य भाव प्रेम का वह प्रकार है जिसमें किसी छोटे बालक के प्रति निश्छल एवं निष्कपट प्रेम की भावना रहती है। यही कारण है कि वात्सल्य को प्रेम की अत्यन्त निर्मल एवं पवित्र स्थिति कहा जा सकता है।

अतः सूर के वात्सल्य रस के सौन्दर्य को निम्नलिखित शीर्षकों में देखा जा सकता है–

(क) वात्सल्य का संयोग पक्ष –

सूर ने वात्सल्य के संयोग पक्ष का बड़ा ही मार्मिक एवं मनोहारी वर्णन किया है, जो इस प्रकार है –

1. कृष्ण के बाल रूप की झांकी –

बालक कृष्ण का अद्वितीय सौन्दर्य माता यशोदा और पिता नन्द को आकर्षित करता ही है साथ ही गोपियों का मन भी उनके संदर्भ में अटक गया है। एक गोपी दूसरे बाल कृष्ण की छवि का वर्णन करती हुई

कहती हैं – श्री कृष्ण समस्त सुखों की सीमा है। करोड़ों कामदेवों से भी अधिक सुन्दर हैं। उनके श्याम वर्ण के शरीर पर आभूषणों की अधिकता को देखकर जान पड़ता है कि श्रृंगार रस रूपी लघु वृक्ष पर अदभूत फल आ गए हैं।

2. बाल कृष्ण को पालने में झुलाना –

बच्चा सोता रहे इसलिए माताएं उसे पालने में झुलाती हैं। छोटा बच्चा माता की भाषा नहीं समझता , पर बच्चे को पालने में झुलाने समय माताएं जो मन में आता है, गाने लगती हैं।

3. बालकृष्ण का घुटनों चलना –

बच्चा खड़ा होने से पहले घुटनों के सहारे सरकता है। बाल कृष्ण ने मुंह पर दही लपेट लिया है, उनके हाथ में मक्खन है और घुटनों के सहारे सरकने के कारण उनके शरीर पर धूल लग गयी है, ऐसे सौन्दर्य को देख एक पल का जीवन धन्य है, सौ पल जीने से क्या।

4. बालकृष्ण को चलना सीखाना –

बच्चा जब थोड़ा बड़ा होने लगता है और खड़े होने में समर्थ हो जाता है तो माता उसे चलना सीखाती है। प्रारंभ में बालक बार –बार गिर जाता है, माता यशोदा बाल कृष्ण को चलना सीखाती है।

''सिखवति चलन जसोदा मैया ।
अरबराइ करि पानि गहावत, डगमगाइ धरनी धरै पैया।।''(3)

5. बाल कृष्ण का दूध पीना –

बच्चों को जब रोटी का स्वाद लग जाता है तो वे दूध पीना नहीं चाहते। दूध बच्चों के स्वास्थ्य के लिए उपयोगी होने के कारण माताएं उन्हें किसी न किसी बहाने से दूध पिलाने का प्रयत्न करती हैं। माता यशोदा ने चोटी बढ़ने का लालच देकर बाल कृष्ण को कजरी गाय का दूध पिला दिया।

''कबहुं बढ़ैगी चोटी
किती बेर मोहि दूध पियत भय यह आजहूं है छोटी।।''(4)

चोटी बढ़ाने के लालच में कृष्ण ने दूध तो पी लिया, पर जब चोटी छूकर देखी तो वह ज्यों की त्यों थी।माता ने जो आश्वासन दिया था , उसके अनुसार बाल कृष्ण का यह पूछना कितना स्वाभाविक था कि मेरी चोटी कब बढ़ेगी ? चोटी तो बढ़ी नहीं। परेशान करके माता द्वारा दूध पिलाया जाना व्यर्थ गया।

6. बाल कृष्ण का हठ करना –

बच्चे बड़े होते हैं। वे उचित –अनुचित का विचार न करके हठ पकड़ जाते हैं। बाल कृष्ण ने आकाश में चमकता चन्द्रमा देखा तो समझ लिया कि यह कोई खिलौना है। वे माता से चन्द्र खिलौना की हठ करने लगे। यदि माता उन्हें यह खिलौना नहीं देंगी तो वे धरती पर लोट जाएंगे और माता` पुत्र नहीं कहलाएंगे।

7. बाल कृष्ण को गोचारण –

बाल कृष्ण कुछ बड़े हुए तो बाहर गाय चराने जाने के लिए माता से आग्रह करने लगे। उन्होंने माता से कहा कि वे बलदाउ और मनसुखा आदि के साथ रहेंगे और भयभीत नहीं होंगे।

8. बाल कृष्ण का गाय दूहना –

गाय चराने के बाद बाल कृष्ण इच्छा हुई कि गाय को दूहा जाए। उन्होंने अपनी माता यशोदा से पूछा कि मैं गाय दूहना चाहता हूं, अतः मुझे गाय दूहना सिखाओ। दूध की धार कैसे बजती है ? इसकी विधि समझाओ।

9. बाल कृष्ण का मक्खन खाना –

श्री कृष्ण को मक्खन खाने का बड़ा ही चाव था। वे ग्वाल–बालों के साथ मिलकर गोपियों के घर से मक्खन चुरा कर खाया करते थे। जब किसी ने यह देखा तो वह माता से शिकायत करने लगी तो कृष्ण यशोदा माता को सफाई देते हैं ।

''मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो,
भोर भयो गैयन के पाछे, मधुवन मोहिं पठायो।
चार पहर बंसीबट भटक्यों, साँझ परे घर आयो।।
मैं बालक बहिंयन को छोटो, छींको किहि बिधि पयो।
ग्वाल बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायो।।''(5)

बालकृष्ण ने स्वयं को निर्दोष सिद्ध करने में जो तर्क माता यशोदा को दिया है उनका वर्णन सूर ने बड़े ही मार्मिक ढंग से किया है। भला तुम्हीं बताओं मैं छोटी बाहों वाला बालक ऊंचे छीके पर रखे माखन के पात्र को कैसे ले सकता हूँ। माता कृष्ण के इस तर्क का भला क्या जवाब दे सकती थी, बस मुसकुराकर रह गयी।

10. बाल कृष्ण के संस्कारों , उत्सवों एवं समारोहों का वर्णन –

सूर ने बालाकें से संबंधित संस्कारों उत्सवों एवं समारोहों का वर्णन करते हुए भी वात्सल्य भाव की सुन्दरता –सुन्दर अभिव्यक्ति की है। जैसे बालकों का कर्ण छेदन, अन्नप्रासन, नामकरण, वर्षगांठ आदि के अवसर पर माता पिता के हृदय में जो भाव सहज उत्साह एवं स्वाभाविक प्रेम उमड़ने लगता है और वे कैसी –कैसी तैयारियां करती हैं। वे सबकुछ सूर की अंधी आंखों से छिपा नहीं है। जैसे कृष्ण के अन्नप्रासन संस्कार के अवसर पर नन्द ने कैसी कसी तैयारियां करवायी । बालकृष्ण की वर्षगांठ के अवसर पर माता यशोदा कितनी प्रसन्न होकर अपनी सखियों के साथ मंगल गान करती हैं। आंगन में मोतियों का चौक पूरवाती हैं तथा अन्य तैयारियां करवाती है।

(ख) वात्सल्य का वियोग पक्ष –

जिस प्रकार सूर ने श्री कृष्ण की बाल क्रीड़ाओं का अत्यन्त ही सुन्दर चित्र अंकित करते हुए वात्सल्य के संयोग पक्ष का अत्यन्त मर्मस्पर्शी वर्णन किया है ठीक उसी प्रकार सूर ने वात्सल्य के वियोग पक्ष का भी अत्यन्त हृदयावक चित्र को वर्णित किया है। सूर द्वारा वर्णित वियोग वात्सल्य प्रभाव व श्रेष्ठता की दृष्टि से संयोग वात्सल्य से किसी प्रकार भी कम नहीं है। सूरदास जी द्वार वर्णित वियोग वात्सल्य की निम्नलिखित स्थितियां हैं –

1. श्री कृष्ण का मथुरा भ्रमण –

श्रीकृष्ण के मथुरा जाने पर समस्त ब्रज में दुःख का सागर उमड़ पड़ता है। कंस द्वारा भेजे जाने पर अक्रूर जी जब कृष्ण को लेने ब्रज आए तो पिता के विवशता के कारण श्री कृष्ण बड़े भाई बलराम के साथ मथुरा को प्रस्थान करने लगे। उस समय यशोदा सबसे निवेदन करने लगी कि हमारा कोई हितैषी हो तो गोपाल कृष्ण को मथुरा जाने से रोक ले।

श्री कृष्ण का मथुरा गमन मात्र हृदय को सहन नहीं हो पाता और माता यशोदा कटा वृक्ष की भांति भूमि पर पछाड़ खा गिर पड़ती हैं। –

'' यह सुनि गिरि धरनि, झुकि माता ।
कहा अक्रूर ठगौरी लाई, लिए जान दोउ भ्राता।।''

2. मथुरा से नन्द का अकेले लौटने का दुःख –

श्री कृष्ण के मथुरा जाने से यशोदा को बहुत दुःख हुआ था। यशोदा को यही आशा थी कि कृष्ण अपने बाबा नन्द के साथ मथुरा भ्रमण के लिए गए हैं और कुछ ही दिनों में वापस आ जाएंगे लेकिन जब यशोदा ने नंद को अकेले आते देखा तो उनके दुःख और निराशा की कोई सीमा ही न रही और वे कृष्ण –कृष्ण चिल्लाती हुई नन्द जी को भला–बुरा कहने लगी।

3. श्री कृष्ण में निवास करने का दुःख –

जब श्री कृष्ण अनेक बुलावा भेजने पर भी मथुरा से गोकुल नहीं जाते तो माता यशोदा के हृदय में पुत्र की पुरानी यादें आती हैं स्मृति पटल पर छा जाने पर कितनी पीड़ा , कितनी टीस उठती है इसका अत्यन्त हृदयद्रावक चित्र सूर ने अंकित किया है।

4. उद्धव का गोकुल आगमन –

कृष्ण के विरह में व्याकुल गोपियों को समझाने मथुरा से कृष्ण के ज्ञानी मित्र उद्धव गोकुल आए। उद्धव जब मथुरा लौटने लगे तो यशोदा ने श्री कृष्ण को आशीर्वाद देने के साथ ही देवकी को संदेश भेजा – बेचारी यशोदा जो कभी श्री कृष्ण का स्वाभाव जितना वह जानती है, उतना देवकी नहीं जानती होगी। श्री कृष्ण निश्चय ही देवकी से संकोच करते होंगे।

5. निर्गुण का खंडन –

सूरदास जी ईष्वर के निराकार रूप को स्वीकार नहीं करते वे उनकों ज्ञानियों के लिए छोड़ देना चाहते हैं। सगुण का मण्डन तथा निर्गुण का खण्डन करते हुए गोपियों से कहती है–

" निरगुन कौन देश को बासी।
को है जनक को है जननी।
कौन नारी को दासी।।" [6]

इस तरह सूर ने वात्सल्य का बड़ा ही हृदयद्राही वर्णन किया है। सूर के वात्सल्य वर्णन में तन्मयता है, स्वाभाविकता है, मनोवैज्ञानिकता है, सहजता है, सरलता हृदय को आकृष्ट करने की पूर्ण क्षमता है। सूर ने केवल बाल –लीलाओं का चित्रण ही नहीं बल्कि बालकों की मानसिक प्रवृत्ति का भी मार्मिक वर्णन किया है। निश्चय ही सूर का वात्सल्य वर्णन हिन्दी साहित्य की अपूर्व निधि है। जिसपर हम गर्व कर सकते हैं। सच तो यह है कि विश्व साहित्य में कहीं भी उनकी टक्कर का वात्सल्य वर्णन उपलब्ध ही नही होगा। सूर

ने वात्सल्य का ऐसा हृदयग्राही एवं मार्मिक वर्णन किया है कि इसके कारण ही आचार्यों को वात्सल्य रस के रूप में एक नवीन रस को मान्यता देनी पड़ी है। सूरदास जी के इस वात्सल्य वर्णन पर टिप्पणी करते हुए डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी कहते हैं कि '' यशोदा के बहाने सूरदास ने मातृ हृदय का ऐसा स्वाभाविक, सरल और हृदयग्राही चित्र खींचा है कि आश्चर्य होता है।'' कि सूर ने वात्सल्य वर्णन में शिशु जीवन की उल्लास एवं उमंग भरी शाश्वत अंकित की है। इसी कारण सूर को वात्सल्य रस का सम्राट माना जाता है। वे बाल –मनोविज्ञान की पारखी माने जाते हैं और बाल प्रकृति एवं बाल– मनोवृत्तियों के कुशल चितेरे के रूप मं प्रसिद्ध हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने उनके वात्सल्य वर्णन की व्यापकता पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है – '' सूर दास अपनी बंद आंखों से वात्सल्य का वर्णन कोना –कोना झांक आए हैं। ''

सूरदास ने वल्लभाचार्य की प्रेरणा से कृष्ण की विविध लीलाओं का वर्णन किया और पुष्टिमार्ग के अष्टछाप के कवियों में स्थान बना लिया। सूर के आराध्य कृष्ण थे। वे उनसे अपना सखा भाव मानते थे। बाल वर्णन लीला के क्षेत्र में सूर अद्वितीय माने जाते हैं। उन्हें वात्सल्य सम्राट कहा जाता है।

'' मैया मैं तो चन्द्र खिलौना लैहों।
जैहों लोटि धरनि पर अबही, तेरी गोद न ऐहों।।''

सूर वस्तुतः अपनी कला के क्षेत्र में सूर्य के समान काव्य गगन में दैदीप्यमान हैं। उक्ति – वैचित्र्य एवं वाग्वैदध्य का चित्रण तो उनकी संयमशीलता के बीच अपने मन की समस्त भावनाओं को व्यक्त कर एक अद्भूत चमत्कार दिखाता है। सूरदास जी के पदों में हृदय का वात्सल्य एवं प्रेम की सहज भावनाओं का सहज एवं यथातथ्य चित्रण इतनी मार्मिकता से हुआ है कि आज तक रचित काव्य –साहित्य में कहीं नहीं मिलता सूर की मनोवैज्ञानिक सूक्ष एवं कल्पना की रंगीनी वस्तुतः अलौकिक है, अनुपम है।हिन्दी के सबसे समर्थ समीक्षक पं. रामचन्द्र शुक्ल की इस संबंध में यह उक्ति सर्वथा सत्य ही है – '' हिन्दी – साहित्य में श्रृंगार का रस –राजत्व यदि किसी ने पूर्ण रूप से दिखाया है, तो सूर ने।''

संदर्भ ग्रंथ सूचीः :–

1. श्रीवास्तव, डॉ. राजेष, हिन्दी साहित्य का प्राचीन इतिहास, कैलाष पुस्तक सदन भोपाल, 2016, पृ. 198।
2. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, कमल प्रकाषन नई दिल्ली, 1997 पृष्ठ 116।
3. www.hindi-web.com , कृष्ण चलना सीखना लीला by सूरदास
4. www.kavitakosh.org , कविता कोष – सूरदास के पद।
5. www.hindisahityadarpan.in , हिन्दी साहित्य मार्गदर्षन, मैंया मोरी मैं नहीं माखन खायो –सूरदास।
6. शुक्ल आचार्य रामचन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, कमल प्रकाषन नई दिल्ली, 1997 पृष्ठ 124।

———